

n. die Knolle TRIK. 2, 4, 32. Falsch sind wohl die Formen केचुक Suçr. 1, 221, 5. 2, 74, 16 und केवूक 311, 8. — Vgl. कचु, कचुी, केमुक.

केणिका f. Zelt H. 681.

केत m. 1) Verlangen, Begehren, Absicht; Aufforderung, Einladung: पुत्रवो ऽनु ते केतमायम् RV. 10, 93, 5. 6, 7. 4, 26, 2. तदप्यं केतो हृद् घ्रा चि चेटे 1, 24, 12. कुविदादस्य रायो गुवां केतं परमावर्तते नः 33, 1. अविष्टनां पैववनस्य केतम् 7, 18, 25. 1, 33, 7. 146, 3. 2, 38, 5. 3, 60, 7. 8, 49, 18. 9, 21, 6. 10, 136, 6. VS. 9, 1. 11, 7. TS. 4, 4, 2. केतो अग्निर्विज्ञातमग्नात् ÇĀṆKH. ÇR. 10, 14, 9. — 2) (wohin man Jmd einladet?) Wohnung (vgl. केतन, निकेत) ÇĀṆKH. bei WILS. निखिलजीवनिकायकेत Bhāg. P. 2, 7, 12. आनकेतं सरस्वत्यां कृतकेतमकेतनम् 3, 4, 6. 8, 5, 38. — 3) Bild, Gestalt (vgl. केतु) NAIGH. 3, 9. अञ्जकुलिशाङ्कुशकेतुकेतैः श्रीमत्पदैः Bhāg. P. 1, 16, 34. — Dieses Wort steht schwerlich in einem verwandtschaftlichen Verhältniss zu केतु; eher liesse sich eine Verbindung mit 2. का oder किन्तु = चित् denken. — Vgl. ब्रह्माकेत, मनस्केत, श्रेयःकेत, संकेत, मुकेत, केतन, केतय्.

केतक m. N. eines Baumes, Pandanus odoratissimus, TRIK. 2, 4, 38. H. 1132. MBu. 3, 11572. 13, 635. 2829. R. 2, 94, 6. 3, 39, 12. 79, 36. 4, 41, 27. Suçr. 2, 434, 17. MEGH. 3, 24. RAGH. 6, 17. 13, 16. RĀGA-TAR. 4, 113. GHAT. 13. Auch केतकी f. AK. 2, 4, 5, 35. Gīt. 1, 35. VER. 6, 8. SĀH. D. 74, 10. Eine von den Lexicographen nicht erwähnte Form केताकि erscheint, durch das Metrum gesichert Suçr. 1, 22, 19. BHARTṚ. 1, 44. Gīt. 1, 31. केतकीनान् R. 2, 21, 24 kann auf केतकी und केताकि zurückgeführt werden.

केतन n. 1) Aufforderung, Einladung (von केतय्, AK. 3, 4, 28, 116. H. an. 3, 365. MED. II. 32. प्रातःगच्छ द्विजो विद्वान्किादिष्टस्य केतनम् M. 4, 110. नाहंति केतनम् MBu. 13, 1583. fgg. केतेनत्नम् 1595. fgg. MĀRK. P. 31, 25. अतिवितथकेतना (Schol. 1: केतनं = शरीर, so auch LASSEN u. RÜCKERT; Sch. 2: = संकेतस्थान) Gīt. 7, 5. — 2) Wohnung, Obdach H. an. MED. न तत्र वृक्षकाया वा पानीये केतनानि च ॥ विश्रमेयत्र वै श्रान्तः पुरुषो ऽधानकर्षितः ॥ MBu. 3, 13396. fg. महेन्द्रकृतकेतनः R. 1, 73, 8. श्रीनिकेतं सरस्वत्यां कृतकेतमकेतनम् Bhāg. P. 3, 4, 6. — 3) Ort ÇĀṆKH. im ÇKDh. संकेतकेतनं संपदामिव KATHĀS. 26, 44. — 4) das symbolische Attribut einer Gottheit, das Wappen eines Kriegers; eine mit einem solchen Zeichen versehene Fahne (vgl. केतु) AK. 2, 8, 2, 67. 3, 4, 18, 116. H. 730. H. an. MED. (कामस्य) केतनं मानमवरैः H. 229. वानरकेतन der einen Affen im Wappen führt MBu. 14, 2430. 1, 8188. मकरकेतन ein Bein. des Liebesgottes HARIY. 9312. BHARTṚ. 1, 54. मकरैर्जितकेतनम् RAGH. 9, 38. व्यद्वचत्तरणे भीता विकीर्णायुधकेतनाः MBu. 3, 14600. — 5) Geschäft (कृत्य) AK. 3, 4, 18, 116. H. an. MED.

केतय् (केत + पू) adj. das Verlangen —, den Willen reinigend VS. 9, 1, 11, 7.

केतय् (von केत), केतयति auffordern, einladen DĀṬUP. 33, 39. तत्र धर्माणमप्याजो केतयत्कुलजं द्विजम् MBu. 13, 1596. केतित 1613. 6233. M. 3, 190. eine Zeit festsetzen (निःश्रावणे, समयोद्घाटणे) KAVIKALPADH. im ÇKDh. hören (श्रवणे) VOP. bei WEST.

— सम् auffordern, einladen DĀṬUP. 33, 39.

केतवेदम् (केत + वे) adj. begehrtlich RV. 1, 104, 3.

केतसाय् (केत + साय्) adj. dem Willen (eines Andern) gehorchend, folgsam: प्रुप्सासो ये ते अद्रिवो मेकना केतसायः RV. 5, 58, 3.

केतु (von कि = चि) m. Up. 1, 73. 1) Lichterscheinung; Helle, Klarheit: अमृतु केतुरुषसः पुरस्तात् RV. 7, 76, 2. 67, 2. 1, 124, 5. 11. प्र केतुना वृक्षा यात्यग्निः 10, 8, 1. प्रोराचयन्मनवे केतुमक्रम् 3, 34, 4. स चि-श्चाधीभि चेटे घृताधीर्त्तरा पूर्वमपरं च केतुम् zwischen Morgen und Abend 10, 139, 2. केतुं कृण्वन्दिवस्परि 9, 64, 8. 1, 3, 12. 71, 2. 92, 1. 103, 1. 6, 7, 6. VS. 14, 1. 37, 21. 38, 16. AV. 7, 11, 1. 13, 2, 9. 34. Häufig pl.: यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं ब्रह्मात्युपसंश्र केतून् 10, 1, 32. RV. 1, 24, 7. प्र-ति केतवः प्रथमा अदम्यन् 7, 78, 1. 8, 43, 5. 10, 91, 5. 111, 7. 1, 50, 12. AV. 13, 2, 1. 3, 23. Lichtstrahl H. 99. an. 2, 164. — 2) Tageszeit: स देवयानः केतुः ÇĀṆKH. Br. in Ind. St. 2, 293. — 3) Erscheinung, Bild, Gestalt NAIGH. 3, 9. स्तवा कुरी सूर्यस्य केतु RV. 2, 11, 6. (उप): उर्धा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः 3, 61, 3. केतुं कृण्वन्केतवै 1, 6, 3. चित्रं केतुं ज्ञानं वा ज्ञानं 10, 2, 6. (सूर्याय) हरेर्दृशाय देवज्ञाताय केतवै 37, 1. 3, 33, 2. महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य 7, 63, 2. देव्यः केतुः 1, 27, 12. नि केतवो ज्ञानानाम् (छातिपसत) 191, 4. समानं केतुं प्रतिमुच्यमाना (wie sonst ब्रह्मम्) Pār. Gṛh. 3, 3. — 4) Erkennungszeichen, Zeichen; Feldzeichen, Banner AK. 3, 4, 12, 63. 18, 116. TRIK. 3, 3, 154. H. 730. an. 2, 164. MED. t. 13. Agni heisst यस्यस्य केतुः RV. 1, 127, 6. 3, 3, 3. 8, 44, 10. 10, 1, 5 u. s. w. उर्ध्वं कृण्वन्ध्वरस्य केतुम् 3, 8, 8. आ देवानामभवः केतुरमे Zeichen oder Unterpfand von den Göttern 1, 17. die Marut heissen वृषभस्य (Indra's) केतुः 1, 166, 1. दधौ पत्केतुमुपमं समत्सु 7, 30, 3. अकारि चारु केतुना तव unter deiner Fahne 1, 187, 1. दधाति केतुमभयस्य ज्ञेताः so v. a. hat den Vortritt 7, 9, 1. अनी ये युधमाय-ति केतुं कृत्वा नीकशः AV. 6, 103, 3. ADBH. Br. in Ind. St. 1, 41. धूमम् — अग्नेर्भवतः केतुम् R. 2, 84, 5. उच्छ्रित्य मकरं केतुं व्याताननमिवात्तकम् MBu. 3, 693. उत्सृज्य केतुम् 4, 2086. चीनं प्रुकामिव केतोः प्रतिवातं नायमानस्य ÇĀK. 33. रथकेतु R. 6, 86, 37. अस्यारण्यस्य महतः केतुभूतमिवो-त्थितम् । गिरिराजमिमम् N. 12, 28. तदनु जयति कृत्स्नां प्रुधैकलासकेतुम् — गो विशालाम् MĀKṢH. 173, 16. तेषां केतुरिव ज्येष्ठो रामो रतिकरः पितुः । वभूव ein Banner gleichsam d. i. wie dieser über Alle hervor-ragend R. 1, 19, 16. — Daher 5) Anführer, Vorgänger, princeps; hervor-ragende Erscheinung: अग्ने केतुर्विशामसि RV. 10, 136, 5. अहं केतुरहं मूर्धा 139, 2. मन्ये वा सर्वनामिन्द्र केतुम् 8, 85, 4. दधाता केतुं जनाय वीरम् 7, 34, 6. अङ्गो केतुरुपसामेत् यमम् (der Mond) 10, 83, 19. विश्वस्मा अग्ने भुव-नाय देवा वंश्चानरं केतुमक्रमकृण्वन् 88, 12. 7, 5, 5. 6, 39, 3. विश्वस्य के-तुर्भुवनस्य गर्भः (Agni) 10, 43, 6. कुलस्य केतुः स्फीतस्य (राघवः) R. 4, 28, 18. मनुवंशकेतु RAGH. 2, 33. — 6) viell. Erkenntniß, Unterscheidungs-gabe: मातुं को ऽस्मिन्कः केतुं कश्चरित्राणि पूरुषे (अदधात्) AV. 10, 2, 12. नि केतुना ज्ञानानां चिक्रेयं पूतदत्ताः RV. 5, 66, 4. — 7) eine ungewöhnliche Lichterscheinung, Meteor, Komet TRIK. 3, 3, 154. H. an. MED. पदा केतव-श्रातष्ठिति ADBH. Br. in Ind. St. 1, 41. विद्युतो ऽशनिमेघाश्च रौद्रकेन्द्रध-नूषि च । उत्कानिर्घातकेतुश्च ज्योतोऽप्युच्चावचानि च (प्रजापतयो ऽसृजन्) ॥ M. 1, 38. केतुचार, सतुकेतुलक्षण Verz. d. B. H. 93. 240. No. 856. Bhāg. P. 5, 23, 7. यत्रा भयं प्रकृत्यो ऽभूत्केतुयो नृय एव च 6, 8, 25. Inshes. heisst so der niedersteigende Knoten; in der Astr. ein Planet (s. ग्रह), in der Mythol. der vom Kopf (s. राज्ञ) getrennte Körper eines Dämons. der wie jener Mond und Sonne beunruhigt und die Finsternisse ver-